प्रश्न: वैश्विक प्रवासन (Migration) और शरणार्थी संकट (Refugee Question) के राजनीतिक और मानवीय आयामों पर प्रकाश डालिए।

प्रस्तावना

वैश्वीकरण के इस युग में पूँजी और वस्तुओं के साथ-साथ मानव श्रम का प्रवाह भी अपरिहार्य हो गया है। प्रवासन जहाँ अधिकांशतः आर्थिक उद्देश्यों (Voluntary Migration) से प्रेरित होता है, वहीं शरणार्थी संकट अनिवार्यतः युद्ध, उत्पीड़न, और राजनीतिक अस्थिरता (Forced Displacement) का परिणाम है। प्रसिद्ध विचारक **हन्ना एरेंड्ट (Hannah Arendt)** ने शरणार्थियों की स्थिति को "अधिकारों को प्राप्त करने के अधिकार का अभाव" (The loss of the right to have rights) कहकर परिभाषित किया था, जो इस संकट की गहराई को दर्शाता है।

1. राजनीतिक आयाम:

प्रवासन और शरणार्थी प्रश्न ने राष्ट्र-राज्यों की 'संप्रभुता' की पारंपरिक अवधारणा को चुनौती दी है:

- **राष्ट्रीय सुरक्षा और सीमा नियंत्रण:** कई राष्ट्र शरणार्थियों के आगमन को अपनी आंतरिक सुरक्षा और संसाधनों पर बोझ के रूप में देखते हैं। इसके परिणामस्वरूप सीमाओं को अभेद्य बनाने और 'सुरक्षाकरण' (Securitization) की प्रवृत्ति बढ़ी है।
- **राष्ट्रवाद और दक्षिणपंथी राजनीति:** यूरोप और अमेरिका जैसे विकसित क्षेत्रों में शरणार्थी संकट ने 'नस्लवाद' और 'राष्ट्रवाद' को तीव्र किया है। कई देशों में राजनीतिक दल प्रवासन को एक चुनावी मुद्दा बनाकर सत्ता प्राप्त कर रहे हैं, जो उदारवादी लोकतंत्र के मूल्यों के लिए एक चुनौती है।
- **अंतरराष्ट्रीय विधि और UNHCR की भूमिका:** 1951 का शरणार्थी सम्मेलन (Refugee Convention) 'नॉन-रिफाउलमेंट' (Non-Refoulement) का सिद्धांत प्रस्तुत करता है, जिसका अर्थ है कि किसी शरणार्थी को उस स्थान पर वापस नहीं भेजा जा सकता जहाँ उसके जीवन को खतरा हो। राजनीतिक आयाम में इन अंतरराष्ट्रीय संधियों और राष्ट्रीय कानूनों के बीच अक्सर टकराव देखा जाता है।

2. मानवीय आयाम:

राजनीतिक बहसों से परे, प्रवासन का सबसे मर्मस्पर्शी पक्ष इसका मानवीय धरातल है:

- **मानवाधिकारों का हनन:** शरणार्थी अक्सर असुरक्षित समुद्री मार्गों या रेगिस्तानों से होकर यात्रा करते हैं, जिसमें जीवन की हानि एक सामान्य घटना बन गई है। मानव

तस्करी और यौन शोषण जैसे अपराध इस मार्ग की भयावहता को बढ़ा देते हैं।

- **अस्तित्व का संकट और मनोवैज्ञानिक प्रभाव:** अपनी जड़ों से उखड़कर एक अनजाने परिवेश में 'अवांछित' बनकर रहना व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-सम्मान को गंभीर क्षति पहुँचाता है। स्वास्थ्य, शिक्षा और आवास जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव इन समुदायों को समाज के हाशिए पर धकेल देता है।
- **महिलाओं और बच्चों की संवेदनशीलता:** अंतरराष्ट्रीय प्रवासन संगठन (IOM) के अनुसार, संकट के समय महिलाएं और बच्चे सर्वाधिक असुरक्षित होते हैं। शिक्षा का अभाव और कुपोषण शरणार्थी शिविरों की एक स्थायी समस्या बन गई है।

आलोचनात्मक विमर्श (Critical Discourse)

राजनीति विज्ञान के विद्वान इस संकट को विकसित और विकासशील देशों के बीच 'उत्तर-दक्षिण विभाजन' (North-South Divide) के रूप में भी देखते हैं। **जोसेफ स्टिग्लिट्ज़** जैसे विचारकों का मानना है कि वैश्विक आर्थिक विषमता ही प्रवासन का मूल कारण है।

- **असमान बोझ:** यह एक विडंबना है कि विश्व के अधिकांश शरणार्थी विकसित देशों में नहीं, बल्कि विकासशील और अल्पविकसित पड़ोसियों (जैसे तुर्की, जॉर्डन, पाकिस्तान, युगांडा) के पास शरण लेते हैं। विकसित राष्ट्रों द्वारा 'द्वार बंद करने' की नीति ने वैश्विक उत्तरदायित्व (Global Burden Sharing) के सिद्धांत पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है।
- **पर्यावरण और जलवायु प्रवासन:** आने वाले समय में 'जलवायु शरणार्थी' (Climate Refugees) एक बड़ा राजनीतिक संकट बनने वाले हैं, जिनके लिए वर्तमान अंतरराष्ट्रीय विधि में पर्याप्त सुरक्षात्मक प्रावधान नहीं हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, प्रवासन और शरणार्थी संकट का समाधान केवल दीवारें ऊँची करने या कठोर कानून बनाने में नहीं है। जैसा कि **अमर्त्य सेन** का 'क्षमता दृष्टिकोण' (Capability Approach) संकेत देता है, जब तक संघर्षों के मूल कारणों—जैसे युद्ध, तानाशाही और आर्थिक असमानता—को संबोधित नहीं किया जाता, तब तक मानव प्रवाह को रोका नहीं जा सकता। वैश्विक प्रवासन के लिए "ग्लोबल कॉम्पैक्ट फॉर माइग्रेशन" (GCM) जैसे अंतरराष्ट्रीय सहयोग और 'मानवीय गरिमा' को केंद्र में रखने वाली नीतियों की महती आवश्यकता है।